



धर्मराज की आरती

ओ३म् जय-जय धर्म धुरंधर, जय लोकत्राता।

धर्मराज प्रभु तुम ही, हो हरिहर धाता ॥१॥

जय देव दंड पाणिधर यम तुम, पापी जन
कारण।

सुकृति हेतु हो पर तुम, वैतरणी ताराण ॥२॥

न्याय विभाग अध्यक्ष हो, नीयत स्वामी।

पाप-पुण्य के ज्ञाता, तुम अन्तर्यामी ॥३॥

दिव्य-दृष्टि से सबके, पाप पुण्य लखते।
चित्रगुप्त द्वारा तुम, लेखा सब रखते ॥४॥

छात्र पात्र वस्त्रान्न क्षिति, शय्याबानी।
तब कृपया, पाते हैं, सम्पत्ति मनमानी ॥५॥

द्विज, कन्या, तुलसी का करवाते परिणय।
वंश-वृद्धि तुम उनकी, करते निःसंशय ॥६॥

दानोद्यापन याजन तुष्ट दयासिन्धु।
मृत्यु अनन्तर तुम ही, हो केवल बन्धु ॥७॥

धर्मराज प्रभु अब तुम दया हृदय धारो।
जगत सिन्धु से स्वामिन, सेवक को तारो ॥८॥

धर्मराज जी की आरती, जो कोई नर गावे।
धरणी पर सुख पाके, मनवांछित फल पावे ॥९॥

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य आरतिया पढ़ें

- [गौ माता](#)
- [रविदास जी](#)
- [हनुमान जी](#)
- [महावीर भगवान](#)
- [शनि देव](#)
- [शारदा माता](#)
- [अम्बे तू है जगदम्बे](#)
- [भैरव आरती](#)
- [ओम जय जगदीश हरे](#)
- [राधा जी](#)
- [साईं बाबा](#)
- [पितर](#)
- [बालाजी](#)
- [पार्वती जी](#)
- [बाबा रामदेव जी](#)
- [आरती कुंजबिहारी](#)

- [जय शिव ओंकारा](#)
- [अन्नपूर्णा माता](#)
- [महालक्ष्मी जी](#)
- [ब्रह्मा जी](#)
- [तुलसी माता](#)
- [शाकंभरी माता](#)
- [गंगा मैया](#)
- [प्रेतराज सरकार](#)
- [सूर्य भगवान](#)
- [परशुराम जी](#)
- [नर्मदा जी](#)
- [बटुक भैरव](#)
- [कृष्ण आरती](#)
- [श्री विंध्येश्वरी](#)
- [विश्वकर्मा जी](#)
- [बाबा गंगाराम जी](#)
- [शीतला माता](#)
- [बगलामुरवी आरती](#)
- [जाहरवीर बाबा](#)
- [आरती ललिता जी की](#)

- [गुरु गोरखनाथ](#)
- [रघुवर लला](#)
- [लड्डू गोपाल](#)
- [गीता जी](#)
- [बद्रीनाथ](#)
- [श्री रामायण जी](#)

हिन्दीपथ.कॉम